कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत पुरातन अध्ययन विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षांत समारोह में माननीय राज्यपाल के संबोधन का प्रारूप

दिनांक 20 मार्च 2024, बुधवार	**समय : 11.00 AM**	**स्थान : नलबाड़ी**

- विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति आचार्य प्रह्लाद रा. जोशीवर्या
- उपस्थित अन्य अतिथिगण,
- विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद, शिक्षक परिषद एवं वैधानिक परिषद के सम्मानित सदस्यगण,
- विश्वविद्यालय के शिक्षकगण
- मेरे प्यारे विद्यार्थियों एवं
- उपस्थित अभिभावकगण

नमस्कार !

सबसे पहले मैं, इस विश्वविद्यालय के द्वितीय दीक्षान्त समारोह के शुभ अवसर पर आप सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। मुझे यहां आप सबके मध्य उपस्थित होकर अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

जैसाकि आपको विदित ही है कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन हेतु असम सरकार द्वारा वर्ष 2011 में स्थापित यह विश्वविद्यालय असम का एकमात्र संस्कृत विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के बाद अल्प समय में ही उच्च शिक्षा के आवश्यक मानकों तथा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) के मूल्याकंन के उपरांत बी-प्लस ग्रेड प्राप्त कर हमें गौरव का अनुभव कराया है। मुझे विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप नवीन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों के भविष्य को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आज के दीक्षांत समारोह में उपाधियां एवं स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों की मैं विशेष रूप से सराहना करता हूं। मेरी जानकारी में आया है कि समारोह में बड़ी संख्या में विभिन्न स्तर की उपाधियां प्रदान की जा रही हैं। यहां 393 विद्यार्थी स्नातकोत्तर उपाधियों से, 27 विद्यार्थी आईएमएस (पांच वर्षीय पाठ्यक्रम वाले) बी.ए. एवं एम.ए. की उपाधियों से तथा 11 विशिष्ट आचार्यों के रूप में उपाधियां प्राप्त कर सम्मानित हो रहे हैं।

हर्ष का विषय है कि समारोह में आप सभी विद्यार्थी वेद, संस्कृत साहित्य, दर्शन, असमिया शिक्षा और राजनीति विज्ञान आदि विषयों में उपाधियां प्राप्त करने जा रहे हैं। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए आए विद्यार्थी देश के विभिन्न क्षेत्रों तथा सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जिनसे यहां समावेशी भारत की झलक देखने को मिलती है।

मित्रो,

मुझे यह कहते हुए गर्व है कि विश्व की प्राचीन भाषाओं में से एक देववाणी संस्कृत अनेक भाषाओं, सभ्यताओं और संस्कृतियों की स्रोतस्विनी मानी गई है। यह भारतीय संस्कृति की संवाहिका और राष्ट्र के जीवन का स्पन्दन है। इसका साहित्य सबसे अधिक समृद्ध और सम्पन्न है। क्योंकि सम्पूर्ण वेद, पुराण, धर्मशास्त्र इत्यादि इसी भाषा में रचित हैं और आधुनिक चिकित्सा पद्धति, अभियान्त्रिकी, शिल्प विद्या आदि का मूल वेद ही है। इसलिए संस्कृत को जाने बिना वास्तविक रूप से हम भारतीय नहीं बन सकते। कहा भी गया है -

भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिःस्तथा।

देवियो और सज्जनो,

भारतीय संस्कृति के प्रति गौरव की भावना हमारी राष्ट्रीय चेतना का आधार है। हमारी संस्कृति की विरासत, संस्कृत भाषा में संचित है, संरक्षित है।

इसलिए संस्कृत भाषा में उपलब्ध सांस्कृतिक चेतना का प्रसार करना एक प्रकार की राष्ट्र सेवा है। राष्ट्र सेवा के इस पावन कृत्य में निरत रहने के लिए मैं संस्कृत भाषा और उसमें उपलब्ध ग्रन्थों से जुड़े सभी आचार्यों, विद्यार्थियों और संस्कृत प्रेमियों की भी सराहना करता हूं।

प्राचीन काल में संस्कृत भाषा लोकभाषा रही है, जिसका उल्लेख वाल्मीकि रामायण में भी मिलता है। राष्ट्र-प्रेम की भावना की उदात्त अभिव्यक्तियां हमें संस्कृत भाषा में ही देखने को मिलती हैं। महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में जन्मभूमि अर्थात स्वदेश को अपनी अमर शब्दावली में स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बताया है :

जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

यह कहा जा सकता है कि संस्कृत भाषा में रचित रामकथाएं, भारतीय संस्कृति की आधारशिलाएं हैं। वेद, वेदाङ्ग, रामायण, महाभारत तथा ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े अनेक संस्कृत ग्रन्थों में भारतीयता के मूल विद्यमान हैं।

देवियो और सज्जनो,

प्राचीन भारत में काशी, तक्षशिला और कांची जैसे स्थानों पर संस्कृत विद्या अध्ययन के श्रेष्ठ केन्द्र विद्यमान थे। लगभग एक ही कालखंड के दौरान, तक्षशिला में पाणिनि ने व्याकरण का निर्माण किया, कौटिल्य ने अर्थशास्त्र एवं नीतिशास्त्र के माध्यम से राज्य और समाज व्यवस्था से जुड़े कालजयी ग्रंथों का प्रणयन किया तथा आयुर्वेद विशारद महर्षि चरक द्वारा औषधि-विज्ञान की आधारभूत संहिता रची गई।

अनेक मूर्धन्य पाश्चात्य विद्वानों ने यह उल्लेख किया है कि प्लेटो और प्लोटिनस जैसे विचारकों के ग्रन्थों की शैली, उनसे बरसों पहले लिखे गये उपनिषदों की शैली से साम्य रखती है। इसे विश्व स्तर पर संस्कृत के प्रभाव एवं योगदान के रूप में देखा जा सकता है। योग-पद्धति को विश्व समुदाय तक पहुँचाने में भी हमारी संस्कृत परंपरा का अमूल्य अवदान रहा है।

वैज्ञानिक-अवधारणाओं पर खरी उतरने के कारण संस्कृत भाषा प्राचीन होते हुए भी आधुनिक है। अष्टाध्यायी के रूप में पाणिनि द्वारा निर्मित संस्कृत व्याकरण का वैज्ञानिक स्वरूप एक कम्प्यूटर सोफ्टवेअर की तरह सु-सम्बद्ध है। गर्व के साथ कहा जा सकता है कि संस्कृत-व्याकरण मानवीय प्रतिभा की उत्कृष्ट उपलब्धि है।

सभी भाषाओं में संस्कृत ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जो कंप्यूटिंग टैक्नोलॉजी और रोबोटिक नियंत्रण के लिए उपयुक्त मानी गई है। इसलिए नासा ने अंतरिक्ष संचार के लिए संस्कृत और वैदिक गणित का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। “इसरो” ने भी अपने “चंद्रयान” और “गगनयान” के सफल अभियानों में वैदिक विज्ञान की सकारात्मक भूमिका का उल्लेख किया है। हमें यह बात ध्यान में रखनी होगी कि संस्कृत ही वह भाषा है, जिसके कारण भारत “विश्व गुरु” की पदवी प्राप्त कर सकता है।

आज के यान्त्रिकी युग में संस्कृत के साथ-साथ आधुनिक शास्त्र, प्रान्तीय भाषा तथा कम्प्यूटर आदि का ज्ञान भी आवश्यक है। यह विश्वविद्यालय इसी आवश्यकता की पूर्ति में सहायक है, क्योंकि यहां असमिया, राजनीति विज्ञान, शिक्षा, दर्शन आदि विभागों में अध्ययन-अध्यापन का कार्य किया जा रहा है। यह भी प्रसन्नता की बात है कि यहां संगीत एवं योग की शिक्षा भी दी जा रही है। संगीत एवं योग मानव जीवन को मानसिक तथा शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् शिक्षा का लक्ष्य शारीरिक, बौद्धिक और आध्यामिक विकास होना चाहिए। आज के संदर्भ में भी सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए संस्कृत सहायक ही नहीं आवश्यक भी है।

आज अधिकांश शैक्षिक संस्थानों में नैतिक शिक्षा नहीं दी जाती, माता-पिता की व्यस्तता के कारण बच्चों को घरों में भी संस्कारों की शिक्षा नहीं मिल रही है। इसलिए शिक्षा में नैतिक शिक्षा और मूल्य आधारिक शिक्षा का समावेश अनिवार्य रूप से किया जाना चाहिए। मेरा विश्वास है कि यह विश्वविद्यालय इस दिशा में निष्ठापूर्वक काम करेगा।

देवियो और सज्जनो,

संस्कृत की संरचना का कई आधुनिक भाषाओं के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है, जिनमें हिंदी, बंगाली और मराठी जैसी कई भारतीय भाषाएँ भी शामिल हैं। संस्कृत एक ऐसी बहुमुखी भाषा है, जिसमें किसी एक वस्तु को व्यक्त करने के लिए शब्दों की एक पूरी श्रृंखला होती है। संस्कृत शब्द मूल शब्दों से बने होते हैं, जिनके अपने अर्थ होते हैं, और इन्हें जोड़कर स्थिर अर्थ वाले नए शब्द बनाए जा सकते हैं, जिससे रचनात्मक अभिव्यक्ति सहज संभव होती है।

संस्कृत का प्रयोग आज आयुर्वेद, योग, इंडोलॉजी और कंप्यूटर विज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी होने लगा है, जो इसके संरक्षण और पुनरुद्धार में सहायक हो सकता है। आज वैज्ञानिक खोजों के नामकरण जैसे आधुनिक संदर्भों में भी संस्कृत का उपयोग किया जाने लगा है, जिससे यह आशा बलवती हो रही है कि ऐसे सकारात्मक प्रयास संस्कृत का संरक्षण सुनिश्चित करने के साथ ही यह भी स्थापित करेंगे कि यह एक जीवंत भाषा है।

संस्कृत को व्यावहारिक एवं रोजगारोन्मुख बनाने के लिए जरूरी है कि संस्कृत के वाङ्मय को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जाये। उसमें सन्निहित ज्ञान-विज्ञान, प्राचीन तकनीकें, प्रौद्योगिकी आदि को वैज्ञानिक आधार देकर पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाये। वैदिक गणित को आज इस दिशा में पर्याप्त महत्व मिल रहा है। संस्कृत शिक्षण, प्रशिक्षण एवं प्रबंधन में आधुनिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर नीति निर्धारण किया जाये।

संस्कृत के प्रचार-प्रसार में महती भूमिका निभाने वाले शिक्षकों, विद्वानों को विशेष सहायता तथा सम्मान दिया जाये। समस्त संस्कृत शिक्षण संस्थानों में सैन्य शिक्षा, प्रबंधन शिक्षा, तकनीकी कौशल शिक्षा जैसे रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम संचालित किये जाएं।

मित्रो,

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह अपेक्षा की गई है कि भारतीय परम्पराओं में निष्ठा रखने वाले हमारे विद्यार्थी 21वीं सदी के विश्व में अपना विशिष्ट स्थान सुनिश्चित करें। संस्कृत साहित्य से परिचित होने के कारण आपको यह विदित ही है कि हमारे महान कवि सदा आत्म-प्रशंसा से दूर रहते थे। ऐसी अहंकार-विहीन उदात्त जीवन-दृष्टि के कारण ही भारत में वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, भवभूति, बाणभट्ट और जयदेव जैसे कालजयी महाकवि हुए हैं।

महान दार्शनिक महर्षि अरविन्द के अनुसार संस्कृत हमारे महान अतीत को जानने के साथ-साथ भारत के भविष्य निर्माण की भाषा भी है। महर्षि अरविन्द ने संस्कृत में "भवानी-भारती" नामक काव्य की रचना करके अपने देश-प्रेम का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया था। मैं आशा करता हूँ कि सभी संस्कृत विद्वान "अमृत काल" में भारत के स्वर्णिम भविष्य के निर्माण में अपना योगदान देने के लिए प्रतिबद्धता के साथ अपने अर्जित संस्कृत ज्ञान का प्रभावी उपयोग करेंगे।

संस्कृत के शब्द भंडार से अनेक भारतीय भाषाओं को शक्ति मिली है और वे भाषाएं विभिन्न क्षेत्रों और राज्यों में फलती-फूलती आगे बढ़ रही हैं। संस्कृत की इसी समावेशी विशेषता के कारण भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में हिन्दी भाषा के विकास के लिए निर्देश दिया गया है।

इसमें भारत सरकार से कहा गया है कि हिन्दी के शब्द भंडार के लिए मुख्यतः संस्कृत से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चत की जाये। इस प्रकार देववाणी संस्कृत अब देशवाणी बनने की दिशा में अग्रसर है।

प्रिय विद्यार्थियो,

आज की दुनिया बेहद चुनौतीपूर्ण है। हमें अपने व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में लगातार चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। मुझे उम्मीद है कि आज के दीक्षांत समारोह में उपाधियाँ प्राप्त करने वाले मेरे प्यारे विद्यार्थी अपने ज्ञान, कौशल और अनुभवों का उपयोग कर इन चुनौतियों पर विजय हासिल कर सकेंगे। संस्कृत में एक प्रसिद्ध कहावत है, जिसे आप सभी विद्यार्थी भलीभांति जानते होंगे –

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

अर्थात् कोई भी काम कड़ी मेहनत से ही पूरा होता है केवल सोचने मात्र से नहीं। कभी भी सोते हुए शेर के मुंह में हिरण स्वयं नहीं आ जाता। अतः हम सभी को आगे बढ़ने के लिए मेहनत करनी होगी। विश्वविद्यालय के उत्थान में प्रत्येक अध्यापक, कर्मचारी और विद्यार्थिगण की समान रूप से भागीदारी होती है, इसलिए समभाव से किया गया कार्य विश्वविद्यालय के लिए श्रेयस्कर होगा। इस संस्थान को एक उत्कृष्ट संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में विश्व में प्रतिष्ठित कराकर हम राजा कुमार भास्कर वर्मा के संस्कृत और पुरातन अध्ययन के उद्देश्य को मूर्त रूप देने में सफल होंगे।

प्रिय विद्यार्थियो

आप सभी अत्यंत भाग्यशाली हैं, क्योंकि आपके माता-पिता-अभिभावकों ने आपको अध्ययन के लिए इस विश्वविद्यालय में भेजकर संस्कृत का विस्तृत एवं गहन ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी भारतीय भाषाओं तथा उनके माध्यम से ज्ञान-विज्ञान को प्रसारित करने पर ज़ोर दिया गया है। इसके लिए मैं भारत सरकार की सराहना करता हूं।

प्यारे विद्यार्थियो,

योग दर्शन तथा योगानुशासन पर आधारित जीवन-शैली विश्व समुदाय को संस्कृत भाषा की अमूल्य सौगात है। आप जैसे संस्कृत के विद्यार्थियों से यह अपेक्षा स्वाभाविक है कि आप सब योगानुशासन को अपने जीवन में □ालेंगे।

आध्यात्मिकता और नैतिकता से जुड़े विषयों पर संस्कृत में अनेक उत्कृष्ट रचनाएं उपलब्ध हैं। प्राचीन काल में आचार्यों द्वारा दिए गये उपदेश आज भी प्रासंगिक हैं और हमेशा उपयोगी रहेंगे।

सत्य बोलना, नैतिकतापूर्ण आचरण करना, स्वाध्याय में प्रमाद न करना, कर्त्तव्य से विमुख न होना तथा मंगलकारी कार्यों के प्रति सचेत रहना आप सबका संकल्प होना चाहिए। ऐसा करके आप अपनी प्रतिभा के साथ न्याय कर सकेंगे और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करने में सफल होंगे।

मुझे विश्वास है कि आप सभी विद्यार्थीगण यहां अर्जित अपने ज्ञान और कौशल से संस्कृत भाषा और भारतीय संस्कृति की गरिमा में वृद्धि करते रहेंगे। संस्कृत भाषा में संचित हमारी अनमोल विरासत को सुदृढ़ बनाते हुए आप सब विकसित भारत के नवनिर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

इसी आशा के साथ मैं आप सबके स्वर्णिम भविष्य की मंगल-कामना करते हुए कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं पुरातन विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में द्वितीय दीक्षांत समारोह के आरम्भ की घोषणा करता हूँ।

धन्यवाद! जय हिन्द! जय भारत!